किसी भी वर्ग में गिना जा सकता हूँ, परन्तु कोई भी अवस्था क्यों न हो, जीवन नाशवान् है। यद्यपि जीवन क्षणभंगुर है और हमें पता नहीं कि अगले जन्म में हमें कौन सी देह प्राप्त होगी, फिर भी माया से उत्पन्न देहात्मबुद्धि के कारण हम अपने को अमरीकी, भारतीय, रूसी अथवा ब्राह्मण, हिन्दू, मुस्लिम आदि मान बैठे हैं। माया के गुणों में बँध जाने से इनके ईश्वर—श्रीभगवान् की हमें विस्मृति हो गयी है। इसीलिए भगवान् श्रीकृष्ण कह रहे हैं कि माया के इन गुणों द्वारा मोहित मनुष्य यह नहीं जानते कि सृष्टि के पीछे मैं (परात्पर) हूँ।

जीवों की मनुष्य, देवता, पशु आदि अनेक कोटियाँ हैं। माया की आधीनता में इन सभी को भगवान् का विस्मरण हो गया है, जो माया से परे हैं। रजोगुणी और तमोगुणी जीवों के सम्बन्ध में तो कहना ही क्या, यहाँ तक कि सत्त्वगुणी जीव भी परतत्त्व के निर्विशेष ब्रह्मरूप का उल्लंघन नहीं कर सकते। सम्पूर्ण श्री, ऐश्वर्य, ज्ञान, वीर्य, यश एवं वैराग्य से युक्त श्रीभगवान् के साकार रूप के सम्बन्ध में वे संमोहित से रहते हैं। जब सत्त्वगुणी जीव तक भगवान् के तत्त्व को जानने में असमर्थ हैं तो रजोगुणी और तमोगुणी जीवों के लिए क्या आशा हो सकती है? कृष्णभावनामृत माया के इन तीनों गुणों से बिल्कुल परे है। अतएव जो यथार्थ में कृष्णभावनाभावित हैं, वे पुरुष ही वास्तव में मुक्त हैं।

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते।।१४।।

दैवी=अलौकिक, अद्भुत; **हि**=निःसन्देह; **एषा**=यह; **गुणमयी**=त्रिविध गुणमयी; **मम**=मेरी; **माया**=शक्ति; **दुरत्यया**=बड़ी दुस्तर है; **माम्**=मेरी; **एव**=ही; **ये**=जो; **प्रपद्यन्ते**=शरण ग्रहण करते हैं; **मायाम् एताम्**=इस संमोहिनी शक्ति से; **तरन्ति**=तर जाते हैं; **ते**=वे।

अनुवाद

मेरी यह दैवी शक्ति, अर्थात् त्रिगुणमयी माया बड़ी दुस्तर है। परन्तु जो मेरे शरणागत हो जाते हैं, वे सुगमतापूर्वक इससे तर जाते हैं।।१४।।

तात्पर्य

श्रीभगवान् की असंख्य दिव्य शक्तियाँ हैं। यद्यपि उनकी शक्ति के अंश होने के रूप में जीव भी दिव्य हैं, पर माया के संसर्ग से उनकी आदि पराशक्ति ढक सी गई है। इस प्रकार माया से ढका जीव उसके बन्धन से छूट नहीं पाता। जैसा पूर्व में कहा जा चुका है, श्रीभगवान् से प्रकट अपरा और परा, दोनों शक्तियाँ नित्य हैं। जीव श्रीभगवान् की नित्य पराशक्ति के अंश हैं, परन्तु अपरा प्रकृति (माया) के बन्धनवश उनका मोह भी अनादि है। इसी कारण बद्धजीव को 'नित्यबद्ध' कहा जाता है। सांसारिक इतिहास की दृष्टि से यह निश्चित करना सम्भव नहीं है कि वह कब बन्धन में पड़ा। परिणामस्वरूप, चाहे माया अपरा (निकृष्ट) शक्ति है, पर उसके